पिताश्री ब्रह्मा के जीवन से जुड़े प्रेरक प्रसंग

त्रिकालदर्शी

14 जनवरी, 1969 में सीतू दादी एक माताओं का ग्रुप लेकर मधुबन आयी थी। उस दिन बाबा ने उन्हें कहा, बच्ची, आज अपने ग्रुप को बाबा के पास लेकर आना। तो वे सब माताओं को लेकर बाबा के पास गयीं। बाबा ने पहले ही लच्छु बहन को कह रखा था कि माताओं को गिट्टी खिलानी है। सबसे पहले मुझे गरम-गरम रोटी और मक्खन खिलाया। उसके बाद नम्बरवार सब माताओं को। फिर लास्ट में बाबा ने सीतू दादी को बुलाकर दोबारा गिट्टी खिलायी। यह देखकर एक माता ने बाबा से पूछ ही लिया कि बाबा इसको क्यों दो बार खिलायी? तब बाबा ने कहा कि क्या पता यह दोबारा खा पायेगी या नहीं। उस समय बाबा में बहुत लाइट थी, वह बहुत प्यारी थी। बाबा ने उन्हें दस मिनट तक दृष्टि दी। अगले दिन ग्रुप वापस चला गया। फिर तीन दिन के बाद समाचार मिला कि बाबा ने शरीर छोड़ दिया। सीतू दादी ने कहा कि उस समय मुझे यह नहीं पता था कि बाबा ने भविष्य को जानकर मुझे ऐसा बोला और शक्ति भी दी। त्रिकालदर्शी बाबा ने मुझे इस कल्प के लिए पालना से भरपूर कर दिया।

अमृतवेला

ब्रह्मा बाबा सदा अमृतवेले दो बजे उठकर शिव बाबा की याद में रह गहन तपस्या करते थे। बाबा की एक बार तबियत ठीक नहीं थी। डाक्टर ने आकर बाबा को चेक किया। तो दादी ने पूछा कि बाबा की तबियत कैसी है? तो डाक्टर ने कहा कि बाबा को अभी थोड़ा रेस्ट की जरुरत है अत: सवेरे-सवेरे जल्दी न उठकर आराम करें। दादी जी बाबा के पास गई और कहा कि बाबा, डाक्टर ने आपको सलाह दी है कि दो चार दिन आप सवेरे जल्दी ब्रह्ममुहूर्त में न उठकर आराम करें। तो बाबा ने कहा कि बच्ची रुहानी डाक्टर कहता है कि सवेरे सवेरे अमृतवेले उठो और जिस्मानी डाक्टर कहता है सवेरे न उठो तो मैं किस डाक्टर की बात मानूं? तो दादी ने कहा कि बाबा रूहानी डाक्टर की ही बात मानो लेकिन दो चार दिन के लिए आप जिस्मानी डाक्टर की भी बात मान लें। तो बाबा ने देखा कि बच्चे पीछे ही पड़ गये हैं तो पीछा छुड़ाने के लिए बाबा ने कहा अच्छा बच्ची देखते हैं। लेकिन दूसरे दिन दादी ने देखा कि तबियत की परवाह न करते हुए भी बाबा रजाई ओढ़े अमृतवेले योग में हाजिर हो गये।

ऊँची दृष्टि

एक बार एक टीचर बहन ब्रह्मा बाबा के पास ज्ञान में नये आए हुए एक भाई की शिकायत लेकर आई कि बाबा यह भाई क्लास में बहुत विघ्न रूप बनता है। खुद भी डिस्टर्ब रहता है और क्लास के अन्य स्टूडेन्ट्स को भी डिस्टर्ब करता रहता है। यहाँ तक कि मैं मधुबन आ रही थी तो हमारे पीछे यह भी आ गया। इसलिए बाबा आप उससे मिलकर उसे कुछ समझायें। तो बाबा ने कहा, अच्छा बच्ची, उस भाई को मेरे पास लेकर आना। तो जब बहन उस भाई को बाबा के पास लेकर गई तो बाबा ने उस बच्चे को देखते ही कहा, आओ मेरे सपूत बच्चे आओ.. आओ मेरे आज्ञाकारी बच्चे आओ। तुम तो बाबा का नाम रोशन करोगे.. तुम सारे विश्व में बाबा का नाम बाला करोगे। बाबा को ऐसे ही सपूत बच्चों की जरूरत है। ऐसे उमंग-उत्साह के बोल से बाबा ने उस बच्चे की पीठ थपथपाई और टोली खिलाते हुए कहा कि जाओ बच्चे ऐसे ही बाप का नाम बाला करते रहना। टोली खाकर जब वह भाई चला गया तो बहन बाबा को कहने लगी, बाबा आपने तो टोली खिलाई और उसकी खूब महिमा की, अब तो उसे और भी अहंकार आ जायेगा। अब तो वह मेरी कुछ भी नहीं सुनेगा। फिर बाबा ने कहा -बच्ची, देखना वह अब परिवर्तन हो जायेगा। कुछ समय बाद वह भाई उस टीचर बहन के पास आकर कहता है कि हमें बाबा से फिर मिलना है। तो वह बहन फिर बाबा के पास गई और कहने लगी, देखा बाबा मैं कहती थी ना कि उसमें और अहम् आयेगा, देखो वह फिर आपसे मिलने के लिए जिद कर रहा है। तो बाबा ने शांति से कहा कि कोई बात नहीं बच्ची उसे मेरे पास भेज दो। इस बार वह बाबा के पास अकेला आया और बाबा के पास आते ही वह बाबा के चरणों पर गिर पड़ा और माफी मांगने लगा और अपनी सारी कमियां बाबा को बताने लगा और कहा कि बाबा आप तो हमें इतनी ऊंची नजर से देखते हो और मैं तो क्लास में बहुत विघ्न रूप बनता था। हमारे कारण सभी परेशान रहते थे लेकिन अब आज से मैं यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं अब सपूत बच्चा बनकर ही दिखाऊंगा। आपका नाम बाला करके दिखाउंगा। आपने जो मेरे में उम्मीदें रखी है वह पूरा करूंगा। इस प्रकार बाबा की ऊँची-महान दृष्टि तथा उमंग-उत्साह के बोल ने उस विघ्न डालने वाले भाई को भी परिवर्तित कर उसमें आत्मिक प्यार भर दिया और उसे हमेशा के लिए सहयोगी और आज्ञाकारी बना दिया।

गीता सार

18 जनवरी, 1969 के स्मृति पटल पर अमिट रूप से अंकित दिवस पर सवेरे से ही ब्रह्मा बाबा का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। परन्तु बाबा अपनी सर्वोच्च स्थिति व ईश्वरीय खुशी में स्थित थे। जब ब्रह्मा वत्सों ने डाक्टर को बुलाने की बात कही तो बाबा ने उसी मस्ती में कहा था -''डाक्टर क्या करेगा, मैं तो सुप्रीम सर्जन से बातें कर रहा हूँ।''

बाबा फिर बच्चों को पत्र लिखने बैठ गये। बाबा के हाथ में थी वह लाल कलम, जिसके सुंदर अक्षर सभी के दिलों को खींचते थे। बाबा ने सभी बच्चों के पत्रों के उत्तर दिये। **बाबा ने लिखा था, 'बच्चे सदा एकमत होकर, एक की याद में रहना है और सदा शक्तियों को आगे रखना है, तब ही सेवा में सफलता होगी।'** ये अंतिम पत्र कई बच्चों ने अपने दिल में छुपा कर रख लिए थे। कितनी सौभाग्यशाली थीं वे आत्माएँ जिन्हें स्वयं सृष्टि रचता ब्रह्मा ने अपने हस्तों से पत्र लिखे थे। फिर शाम को जल्दी ही क्लास आरंभ हुई। साकार रूप में जो अंतिम महावाक्य उच्चारे वे तो सम्पूर्ण गीता का सार हैं, दिल में समाने तुल्य हैं....बाबा ने कहा था -'' **बच्चे, सिमर-सिमर सुख पाओ, कलह-क्लेश मिटें सब तन के, जीवन मुक्ति पाओ।'' बच्चे, निंदा हमारी जो करे, मित्र हमारा सोई, तुम्हें किसी की भी निन्दा नहीं करनी चाहिए और किसी से वैर-विरोध भी नहीं रखना।''** इस प्रकार याद की यात्रा पर बल देते हुए यज्ञ पिता बाबा खड़े होकर गेट की ओर चले और फिर गेट पर रूक गये...बोले - **'बच्चे, निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी बनो।** जैसे बेहद का बाप सम्पूर्ण निर्विकारी है, सदा निराकार है, निरहंकारी है वैसे ही बच्चों को भी बनना है।' फिर बाबा के मुख से ये शब्द निकले **-'अच्छा बच्चे, विदाई।'** ये शब्द बाबा ने केवल उसी रात बोले थे, नहीं तो बाबा सदा बच्चों को गुडनाईट ही कहा करते थे।

आबू रोड। वरिष्ठ नागरिक स्नेह मिलन कार्यक्रम में ब्र.कु.उषा, पेंशन समाज के अध्यक्ष परमानंद त्रिवेदी, बनवारीलाल सोनी, ब्र.कु.भरत, डॉ.महेश, ब्र.कु.भानु, ब्र.कु.ओम तथा अन्य।

दिल्ली-आजादपुर। ग्रामीण महिला सशक्तिकरण अभियान में ब्र.कु.राजकुमारी, मण्डल अध्यक्ष शशिपाल, ब्र.कु.जयप्रकाश, ब्र.कु.शारदा तथा अन्य।

बदायूँ। सिटी मजिस्ट्रेट निधि श्रीवास्तव को ईश्वरीय सौगात व प्रसाद देते हुए ब्र.कु.सरोजनी एवं ब्र.कु.अरूणा।

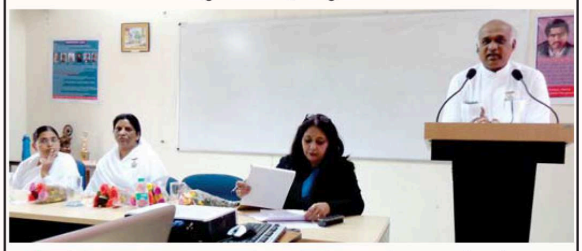

इंदौर। देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के यु.जी.सी.अकादमी स्टॉफ कालेज के सभागार में जीवन में मूल्य एवं आध्यात्मिकता विषय पर विचार व्यक्त करते हुए ब्र.कु. पांड्यामणि। मंचासीन हैं कालेज निदेशक डॉ.नम्रता शर्मा, ब्र.कु.शशि व ब्र.कु.सोनाली।

फाजिलनगर। जिला जज आनंद कुमार उपाध्याय को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.भारती।

जंग बहादुरगंज (खीरी)। आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए पूर्व ब्लाक प्रमुख संतोष सिंह, ब्र.कु.सीमा तथा अन्य।